रिकार्ड–दूर देश का रहने वाला–––––––––––ओमशांति प्रातःक्लास 15–6–67

आज है वृक्षपतिवार। उसका नाम रख दिया है वृक्षपत। वो तो त्यौहार आदि वर्ष2 मनाते हैं। तुम तो हर हफ्ते वृक्षपत डे मनाते हो। वृक्षपति अर्थात् इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का जो बीजरूप है ,चैतन है वो ही इस झाड़ की आदि,मध्य,अंत को जानते हैं और जो भी वृक्ष है वो सब जड़ होते हैं। यह सब है चैतन। इनको कहा जाता है कल्पवृक्ष। इनकी आयु है 5000वर्ष। और यह वृक्ष चार भागों में है। हर चीज चार भागों में होती है। यह दुनियां भी चार भागों में है। यह भी इस समय तुम बच्चे ही जानते हो। और कोई भी मनुष्य नहीं जानते। अभी इस पुरानी दुनियां का अंत है। दुनियां कितनी बड़ी है। यह ज्ञान कोई भी मनुष्य मात्र की बुद्धि में है नहीं। यह है नई दुनियां के लिए नई शिक्षा। और फिर नई दुनियां का राजा बनने के लिए अथवा आदि सनातन देवी देवता धर्म के बनने लिए। शिक्षा भी नई है। भाषा तो वो ही हिंदी है। बाबा ने समझाया है जब दूसरी राजाई स्थापन होती है तो तो उनकी भाषा ही अलग होती है। सतयुग में क्या भाषा होगी?सो बच्चे थोड़ा2 जानते हैं। आगे बच्चियां ध्यान में जाकर बताती थीं। वहां कोई संस्कृत नहीं है। संस्कृत तो यहां है। जो यहां पर है वो फिर वहां नहीं हो सकती। तो बच्चे जानते हैं कि यह है वृक्षपति। उनको फादर रचता भी कहते हैं झाड़ का। यह है चैतन। बीजरूप। वो सब होते हैं जड़। बच्चों को सृष्टि की आदि,मध्य,अंत को भी जानना चाहिए ना। जनावर तो नहीं जानेंगे। मनुष्य होकर यह नहीं जानते तो तब तक कि हूबहू जैसे कि जनावर से भी बदतर। 5 विकार भी है। और कोई इस समय सुख नहीं है। नालेज नहीं होने कारण मनुष्यों को सुख नहीं है। यह है बेहद की नालेज जिससे ही बेहद का सुख होता है। हद की नालेज को कागविष्ठा समान सुख कहा जाता है। तुम जानते हो हम बेहद के सुख के लिए अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं फिर से। यह फिर से ;अक्षरद्ध सिर्फ तुम्हीं सुनते हो। तुम्हीं फिर से मनुष्य से देवता बनने वो ही राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर रहे हो। यह भी तुम जानते हो ज्ञान का सागर बाप निराकार है। निराकार सभी आत्मायें हैं। सबको अपना2 शरीर है। इनका अलौकिक जन्म कहा जाता है। और कोई मनुष्य ऐसे जन्म ले नहीं सकते हैं। जैसे कि वो लेते हैं। और इनकी भी वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करते हैं। बच्चों को सम्मुख बैठकर समझाते हैं। और कोई बच्चे2 कह नहीं सकते। कोई भी धर्म वाला हो जानते हो शिवबाबा है। वो तो जरूर बच्चे2 कहेंगे। बाकी कोई भी मनुष्य को ईश्वर नहीं कह सकते हैं। यों तो गांधी जी को बापू कहते थे। म्यून्सिपालिटी के मेयर को भी फादर कह देते हैं ;परंतु वो फादर है सिर्फ सब देहधारी। तुम जानते हो हमारी आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं। बाप बार2 कहते हैं अपने को आत्मा समझो। वो बाप आकर पढ़ाते भी हैं। यह है ईश्वरीय कुटुम्ब। बा पके कितने सारे बच्चे हैं। तुम भी कहते हो बाबा हम तो आपके हैं। तो बच्चे हो गये ना। कहते बाबा, हम एक रोज का बच्चा हूँ। मास का बच्चा हूँ। पहले तो जरूर छोटा ही होगा। भल दो–चार दिन का छोटा बच्चा ही हो ;परंतु आर्गन्स तो बड़े हैं ना। इसलिए सब बच्चों को पढ़ाई चाहिए। जो भी आते हैं सबको बाप पढ़ाते हैं। तुम भी पढ़ते हो। बाप के बच्चे बनें फिर बाप समझाते हैं तुमने कैसे 84जन्म लिये हैं। बाप कहते हैं मैं भी बहुत जन्मों के अंत के भी अंत में इनमें प्रवेश करता हूँ। फिर पढ़ाता हूँ। बच्चे जानते हैं कि यहां हम बड़े ते बड़े टीचर के पास आये हैं जिससे ही फिर यह टीचर्स निकले हैं। जिनको पंडे कहते हैं। वो भी सबको पढ़ाते रहते हैं। जो2 जानते जावेंगे तुम पढ़ाते रहेंगे। पहले2 तो समझाना ही यह है कि दो बाप हैं। एक लौकिक और दूसरा पारलौकिक। बड़ा तो जरूर पारलौकिक बाप हो गया ना। जिनको ही भगवान कहा जाता है। तुम जानते हो अभी हमको पारलौकिक बाप मिला है। और किसी को पता नहीं है।––––––––––––––––––अभी तुम बच्चे समझते हो कि हम आत्माओं को बाप पढ़ाते

हैं। हम आत्मायें ही एक शरीर छोड़कर दूसरा लेते हैं। उंच ते उंच देवता बन जावेंगे। उंच ते उंच पढ़ाने वाले की उंच ते उंच शिक्षा है। हम उंच ते उंच बनने लिए आये हैं। यह भी हो सकता है कि कोई को किसी बात में संशय आने पर पढ़ाई छोड़ देवें। ऐसे छोड़ देते हैं। एक तो संशय में आकर छोड़ देते हैं। दूसरा फिर माया के तूफान सहन नहीं कर पाते हैं। हार खा लेते हैं। हार खाते ही हैं काम रूपी महाशत्रु से। इसके कारण ही बच्चों को कितना सहन करना पड़ता है। बाप कहते हैं कल्प2 तुम अबलाओं, माताओं की ही पुकार होती है। कहते हैं बाबा हमको नग्न होने से बचाओ। बाप कहते हैं याद के बिना और कोई रास्ता नहीं है। याद से ही बल आता जावेगा। माया बलवान की ताकत कम होती जावेगी। फिर तुम छूट जावेंगे। ऐसे भी बहुत बंधने होते हैं जो छूटकर आते हैं। फिर अत्याचार होना बंद हो जाता है। फिर आकर शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा बातचीत करते हैं। यह भी टेव पड़ जानी चाहिए। बुद्धि में यही रहना चाहिए कि हम शिवबाबा पास जाते हैं। वो इस ब्रह्मा तन में आते हैं। हम शिवबाबा के आगे बैठे हैं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यही शिक्षा मिलती है। बाप से मिलने आओ तब भी अपने को आत्मा समझो। आत्म अभिमानी भव। यह ज्ञान तुमको सब अभी मिलता है। यही है मेहनत। उस भक्ति मार्ग में तो कितने वेद—शास्त्र पढ़ते हैं। यह तो एक ही मेहनत है सिर्फ याद की। यह बहुत सहज ते सहज है। बहुत डिफिकल्ट ते डिफिकल्ट है। बाप को याद करना इससे सहज बात कोई है नहीं। बच्चा ——— और हुआ और मुख से बाबा—बाबा निकलेगा। बच्ची के मुख से मां—मां निकलेगा। आत्मा ने फीमेल का शरीर लिया तो फीमेल के पास ही जावेगा ;क्योंकि वो उसको दूध पिलाती है। बच्चे अक्सर करके बाप को याद करते हैं ;क्योंकि वर्सा मिलता है। अभी तुम आत्मायें तो सब बच्चे हो। तुमको वर्सा मिलता है बाप से। आत्मा को वर्सा मिलता है बाप को याद करने पर। देहअभिमानी होंगे तो वर्सा पाने में मुष्किलात होगी। बाप कहते हैं मैं बच्चों को ही——————————————————जानते हैं कि हमको विश्व का बाप पढ़ाते हैं। यह बातें बाप के बिना कोई समझा नहीं सकते। उनके साथ ही भक्तिमार्ग में भी तुम्हारा प्यार था। तुम सभी आशिक थे उस माशूक के। सारी दुनियां आशिक है एक माशूक ही की। परमात्मा को सब परमपिता भी कहते हैं। बाप को माशूक नहीं कहा जाता है। तुम समझते हो कि तुम भक्तिमार्ग में आशिक थे। अभी श्री है बहुत ; परंतु परमात्मा किनको कहा जावे इसमें बड़ी मूंझ होती है। अपने को मनुष्य परमात्मा कह देते हैं। (गणेश) को, हनुमान को भी परमात्मा कह देते हैं। एकदम ही सूत मुंझा हुआ है। सिवाय एक के कोई ठीक कर नहीं सकते। कोई की ताकत नहीं। बाप ही आकर बच्चों को समझाते हैं। बच्चे फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं और समझाने के लायक बनते हैं। राजधानी स्थापन हो रही है हूबहू कल्प पहले मिसल। तुम यहां पढ़ते हो। फिर प्रारब्ध नई दुनियां में पावेंगे। तुम काल पर विजय पाते हो। वहां कब अकाले मृत्यु होती ही नहीं है। नाम ही है स्वर्ग। तुम बच्चों को तो इस पढ़ाई में बहुत खुशी होनी चाहिए। बार2 अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप की याद से ही बाप की प्रापर्टी भी याद आवेगी। सेकेंड में सारे ड्रामा का ज्ञान बुद्धि में आ जावेगा। मूल स्थूल सूक्ष्मवतन। 84 का चक्र। बस। बाकी क्या है। यह तो सारा नाटक भारत पर ही बना हुआ है। बाकी तो सभी हैं बाइप्लाट्स। नाटक में सब बायप्लाट्स भी होते हैं ना। रमत—गमत के लिए। बाप नालेज भी तुमको सुनाते हैं। तुम्हीं उंच फिर नीच ते नीच बनते हो। डबल सिरताजधारी राव और अब फिर बिल्कुल ही रंक। अभी तो भारत रंक भिखारी है। भारत की गवर्मेंट का क्या हाल है। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। इसको ही पंचायती राज्य कहा जाता है। सतयुग में था डबल सिरताजधारी महाराजा तथा महारानी का राज्य। तुम्हारी बुद्धि में अब आ गया है कि हम कैसे राज्य करते हैं। कैसे जन्म लेते हैं। तो जो ब्राह्मण बनते हैं प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद तो सब हो गये। सब मानते हैं

आदि देव ब्रह्मा को। नाम बहुत रख दिये हैं। महावीर भी इनको ही कहते हैं। महावीर बंदर को भी कहते हैं। अब शास्त्रों में तो दंत कथायें हैं। वास्तव में वो सब है तुम्हारे पर। तुमको तो इतना योग में रहना चाहिए कि माया के तूफान कितने भी आवें ;परंतु तुम हिलो नहीं। इतने महावीर बनने हैं। महावीर के बच्चे भी महावीर ;क्योंकि तुम माया पर जीत पाते हो। एक के धनुष की बात नहीं है। तुम हर एक को धनुष तोड़ना है अर्थात् माया पर जीत पानी है। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। यह सब बच्चे जानते हैं कि योरोपवासी कैसे लड़ते हैं। ;भारतद्ध ही में कौरवों–पांडवों की लड़ाई है। उन्होंने फिर यादवों की बदली पांडव लिख दिया है। तुम देखते भी हो कि यादव–कौरव मिक्स हुये पड़े हैं। गाया भी जाता है खून की नदियां बहेंगी। विष्णु को क्षीर सागर में दिखाते हैं। ल. ना. हैं पारसनाथ। उनको फिर जापान तरफ पशुपतिनाथ कहा जाता है। विष्णु का दो रूप पारसनाथ पारसनाथिनी। वो पशुनाथ पति। उसमें विष्णु का चित्र बनाते हैं। लेक भी बनाते हैं। लेक में अब क्षीर कहां से आया?बड़े दिन में उस लेक में दूध डालते हैं। फिर दिखाते हैं कि क्षीर सागर में विष्णु सोया हुआ है। अर्थ तो कुछ भी नहीं है। चार भुजाओं वाला मनुष्य ही कोई होता नहीं। अब तुम बच्चे सोशल वर्कर हो। रुहानी बाप के बच्चे हो ना। बा पतो सब बातें समझाते हैं। इसमें तो कब भी कोई संशय नहीं आना चाहिए। संशय माना ही माया का तूफान। तुम हमको बुलाते ही हो कि हे पतित–पावन आओ। आकर हमको पावन बनाओ। यह तो पतित दुनियां है ना। पावन बनाने वाला एक ही बाप है। वो कहते हैं कि मामेकम् यादक रो तो पावन बन जावेंगे। 84के चक्र को याद करना है। बाप को कहा जाता है पतित–पावन। ज्ञान का सागर। दो चीज हो गई। पतितों को पावन बनाते हैं और 84के चक्र का ज्ञान देते हैं। यह भी तुम्हीं बच्चे जानते हो कि 84का चक्र फिरता ही रहेगा। उनका एंड नहीं है। यह भी तुम जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। उनको पतियों का पति भी कहते हैं। अब बाप कहते हैं मेरे द्वारा तुम बच्चों को वर्सा बड़ा भारी मिलता है ;परंतु ऐसे मुझ बाप को भी फारकती दे देते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। पढ़ाई को ही छोड़ देते हैं। कितने मूर्ख हैं। तब बाप कहते हैं कि मूर्ख ते मूर्ख सारी दुनियां भर में देखना हो तो यहां आकर देखो और अक्लमंद भी देखना हो तो यहां आकर देखो। अक्लमंद उनको कहा जाता जो पढ़कर और फिर जल्दी ही पढ़ाने लग पड़ते हैं। उस पढ़ाई से क्या मिलता है?इस पढ़ाई से क्या मिलता है?फिर क्या पढ़ना चाहिए?बाबा बच्चों से पूछते हैं। समझाते भी हैं कि यह पढ़ाई बहुत अच्छी है। फिर भी कहते हैं क्या करें?जिस्मानी पढ़ाई नहीं पढ़ेंगे तो मित्र,सम्बंधी नाराज़ होंगे। बाप कहते हैं दिन–प्रतिदिन समय थोड़ा होता जाता है। इतनी पढ़ाई तो पढ़ नहीं सकेंगे। बड़ी जोरदार तैयारियां हो रही हैं। हर प्रकार से तैयार होते रहते हैं। दिन–प्रतिदिन एक–दो में दुष्मनी बढ़ती जाती है। कहते भी हैं ऐसी2 चीजें हैं तो जो फट से कोई को भी खलास कर देवें। वो कहते हैं कि अगर हम भी इसमें मदद देते थे तो यह लड़ाई बड़ी जारे से लग जाती थी। और तुम बच्चे जानते हो कि अभी ड्रामाअनुसार वो लड़ाई लग नहीं सकती। राजाई स्थापन होनी है। तब तक हम भी तैयारी करते रहें। वो भी तैयारी करते रहते हैं। तुम्हारा अभी तो बहुत प्रभाव निकलने का है। गाया भी जाता है अहो प्रभु तेरी लीला–––––––– यह इसी समय का गायन है। यह भी गाया हुआ है तुम्हारी गत मत न्यारी–––––––––––– सब आत्माओं का पार्ट न्यारा है। अब बाप तुमको श्रीमत दे रहे हैं कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। मनुष्यों की मत अब कहती है कि गंगा पतित–पावनी है। उसमें स्नान करने पर हम पावन बन जावेंगे। कितने गशे मारते रहते हैं। कई भोले होते हैं तो जो कुछ सन्यासी कहते हैं वो ही मान लेते हैं। कितने धक्के खिलाते हैं। अनेक ढेर के ढेर गुरू हैं। अब बाप तो कहते हैं कि मामेकम् याद करो। अब वापस चलना है। वहां से फिर

पार्ट बजाने आना है। पहले सतोप्रधान फिर सतो, रजो,तमो में पार्ट बजाते हैं। इस समय सारा झाड़ ही पुराना है। जैसे बड़ का झाड़ होता है। उसका थुर खतम हो गया है। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। उनका ही मिसाल देते हैं। अभी एक आदि सनातन देवी देवता धर्म है नहीं। बाकी सब है। अब फिर से आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। बाकी सब विनाश हो जाना है। तुम जानते हो कि हमी राज्य करते थे। और कोई धर्म नहीं था। हम ही विष्व का मालिक बने थे। विश्व में शांति सिवाय परमपिता परमात्मा के कोई कर नहीं सकते। परमपिता परमात्मा ही कर रहे हैं। 100प्रतिशत पवित्रता,सुख,शांति ड्रामाप्लानअनुसार अब भी स्थापन कर रहे हैं। कैसे?सो ही समझो। विष्व में शांति कोई मनुष्य तो कर नहीं सकते। तुम बच्चे भी बाप का मददगार बनते हो। जो बहुत मदद करेंगे वो माला का दाना बन जावेंगे। तुम बच्चों को तो नाम भी कितने रमणीक मिले थे। वो नामों की लिस्ट भी आलबम्ब में रख देनी चाहिए। कितने रमणीक नाम थे। तुम भट्ठी में थे ना। घर–बार छोड़कर बाप के आकर बने। एकदम भट्ठी में आकर पड़े। ऐसी पक्की भट्ठी थी जो अंदर में कोई बाहर का आ नहीं सकते थे। जबकि बाप का बन गये तो फिर नाम जरूर होने चाहिए। सब कुछ सरेंडर कर दिया। इसलिए ही नाम रख दिये। वंडर हुआ ना। लिस्ट भी संदेशी को मिली। बाबा ने नाम रख दिये। तुम ब्राह्मणों की माला तो बन नहीं सकती। बाबा तो जवाहरी था ना। जानते हैं कि मोतियों की माला कैसे बनती है। रुद्राक्ष की भी माला बनती है। उसमें फ्रंट में बड़े मोती फिर छोटे2 पिछाड़ी तक हो जाते हैं। वो तो देखने में भी नहीं आते हैं। फूलों को तो बड़े2 छोटे सभी नमन करते हैं। बाप है ना। अब बाप भी बच्चों को नमस्ते करते हैं। बच्चे बाप को करते हैं। यह भी एक नम्रता है। नमस्ते बाबा। नमस्ते बच्चों। इसमें भी बड़ा अर्थ है। बाकी तो सबमें है ही अनर्थ। भक्तिमार्ग में है अनर्थ। तभी तो तमोप्रधान बन गये हो ना। अभी तुम माला उठाकर राम2 नहीं करेंगे। बाप स्वयं अपनी रुद्रमाला बना रहे हैं। आज भोग है। यह है सुहावना संगमयुग। पियर घर, ससुर घर वाले आपस में मिलते हैं। यह बड़ी रमणीक बातें हैं। बाप को और चक्र को याद करो। सो भी चुप। कोई भी आवाज नहीं। सिर्फ चुप ही रहते रहो तो उदास ही हो जाओ। इसलिए ही बीच2 में यह रमणीकता है। अब तुम जानते हो कि कैसे हमने राजभाग लिया और गंवाया है। जो वापस ले गये हैं उनसे ही फिर वापस आ रहा है। क्रिष्चियन्स लोग पास धन बहुत है। कृष्ण के पास भी धन बहुत। तो उनका दोनों का ड्रामा में पार्ट जैसे कि लेन–देन का है। देते भी हैं तो लेते भी हैं। बहुत मदद मिलती है भारत को। नहीं तो भूखों मरना पड़े। अभी तो देखो अनाज की कितनी तंगी है। क्या मिलता है?यहां तो तुम्हारी हर एक से हर एक चीज नम्बरवन होती है। यहां पर ही ऐसी2 चीजें हैं। तो विचार करो कि सतयुग में क्या2 नहीं होगा। तो ऐसी बादशाही लेने लिए पुरुषार्थ करना पड़े ना। कुछ भी तकलीफ नहीं सिर्फ बाप को याद करना है। अब 84का चक्र पूरा हुआ है। चलना है अपने घर। गुडमार्निंग वा नमस्ते। ओम।

<u>रही हुई प्वाइंट्स–</u> आखरीन अंत में ही तुम कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। यह भी ड्रामा में नूंध है। फिर भी पुरुषार्थ करवाया जाता है। बाप को याद करो। बरोबर यही महाभारत लड़ाई भी है। सभी खतम हो जावेंगे। बाकी तो भारतवासी ही रहेंगे। फिर तुम विष्व पर राज्य करते हो। अभी बाप तुमको पढ़ाने आये हैं। वो ही ज्ञान का सागर है। यह भी खेल है। इसमें मूंझने की बात ही नहीं है। माया तूफान में लावेगी। बाप समझाते हैं कि इनसे डरो मत। बहुत गंदे2 संकल्प आवेंगे। वो भी तब जब कि बाबा की गोद लेंगे। जब तक कि गोद ही नहीं ली है तो माया इतना नहीं लड़ेगी। गोद लेने बाद ही तूफान लगते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं कि गोद भी सम्भाल कर लेनी है। कमजोर हैं तो इससे तो प्रजा में राजाई पद पाना अच्छा है। नहीं तो दास–दासियां बनना पड़ेगा। यहां तो सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। अच्छा मीठे2 बच्चों को बापदादा अब सलामालेकम करते हैं। विदाई।